माननीय महानिदेशक महोदय का वन उत्पादकता संस्थान दौरा

दिनांक: 31.05.2022

वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी, समूह समन्वयक (अनुसंधान) डा. योगेश्वर मिश्रा एवं अन्य वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों द्वारा दिनांक 31.05.2022 को माननीय महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून सह कुलाधिपति, वन अनुसंधान संस्थान सम विश्वविद्यालय, देहरादून, श्री अरुण सिंह रावत, भा.व.से. का वन उत्पादकता संस्थान आगमन के क्रम में हवाई अड्डा एवं संस्थान के अतिथि गृह में पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया गया।

संस्थान आगमन के पश्चात माननीय महानिदेशक महोदय ने नवस्थापित प्रौधोगिकी प्रदर्शन एवं व्याख्या केन्द्र (Technology Demonstration & Interpretation Centre) का उद्घाटन करते हुए कहा कि यह TDC पूर्वी क्षेत्र में अपनी तरह का पहला केंद्र होगा जिसमें संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों का व्याख्यात्मक प्रस्तुतीकरण किया गया है।। उन्होने प्रत्येक पैनल (Panel) एवं डायरमा (Diorama) का निरीक्षण करते हुए केंद्र की सराहना की। श्री एस.एन.वैद्य एवं श्री बी.डी.पंडित के साथ के साथ लाह प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए काफी दिलचस्पी से चर्चा की। पैनलों की जानकारी निदेशक एवं श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की द्वारा दी गयी । कृषिवानिकी मोडल को श्री आदित्य कुमार ने उचित प्रकार से समझाया। महानिदेशक महोदय ने खनन क्षेत्रों के द्वारा पर्यावरणीय ह्रास, वनों के प्रकार एवं अन्य प्रादर्शों का अवलोकन करते हुए स्थापित केंद्र की सराहना की | उद्घाटन के इस अवसर पर माननीय महानिदेशक महोदय ने आगुंतक पुस्तिका में प्रथम हस्ताक्षर किए एवं निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी एवं सहयोगियों को साधुवाद दिया।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

(वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार)

दिनांक 01.06.2022 को संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी की तत्पर पहल एवं आग्रह पर भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के माननीय महानिदेशक श्री अरुण सिंह रावत जी के साथ संस्थान के वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं शोध सहयोगियों की औपचारिक बैठक आयोजित की गई जिसमे संस्थान के निदेशक सहित समस्त वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं शोधकर्मियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए उप वन संरक्षक, श्रीमती अंजना सूचिता तिर्की ने माननीय महानिदेशक महोदय का आभार व्यक्त किया कि उन्होनें अपने व्यस्ततम कार्यक्रमों के बावजूद वन उत्पादकता संस्थान आकर इस बैठक के लिये अपना बहुमूल्य समय निकाल पाए।

माननीय महानिदेशक महोदय का स्वागत करते हुए संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने कहा की भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के माननीय महानिदेशक को पाकर संस्थान गौरवांवित महसूस कर रहा है। महानिदेशक महोदय संस्थान एवं झारखंड के लिए नए नहीं हैं तथा पूर्वी क्षेत्र के विकास में संस्थान के योगदान को दिशा देने में श्रीमान का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महानिदेशक महोदय यहां की गतिविधियों से काफी प्रभावित रहे हैं तथा इस क्षेत्र के विकास के लिए प्रयत्नशील भी रहे हैं।

उन्होनें महानिदेशक महोदय को बताया कि विशेषज्ञ वैज्ञानिकों की कमी के बावजूद भी सीमित संसाधन में सभी मिलकर संस्थान को आगे बढ़ाने हेतु अधिकतम योगदान कर रहे हैं। विस्तार कार्यक्रमों, सामाजिक मीडिया (Social Media) अथवा आपसी सम्पर्क से संस्थान की पहचान काफी बढ़ी है।आदिवासी बहुल क्षेत्र होने के नाते अकाष्ठ वनोत्पाद की विशाल संभावना को देखते हुए कई परियोजनाओं पर कार्य चल रहा है तथा खनन क्षेत्रों की अधिकता को देखते हुए पारिस्थितिकी संबंधी परियोजनाएं भी मिल रही है। संस्थान अन्य श्रोतों से भी परियोजनाए लाने में सफल हुआ है तथा कुछ क्षेत्रों से परियोजनाए मिलने का आश्वासन भी मिला है, जिसमे आपके सहयोग की अपेक्षा रहेगी। निदेशक ने बताया कि श्रीमान के सहयोग एवं अनुमोदन से निर्मित संस्थान का प्रौद्योगिकी प्रदर्शन एवं व्याख्या केंद्र जिसका उद्घाटन आपके कर कमलों से हुआ है, इसमे अच्छे पदचाप (Foot fall) की संभावना है।

निदेशक के आग्रह एवं उप वन संरक्षक श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की के निवेदन के बाद माननीय महानिदेशक महोदय ने अपने संबोधन में बताया कि भौगोलिक दृष्टिकोण से यह संस्थान एक बड़े भूभाग का प्रतिनिधित्व करता है जहां सीमित संसाधनों में संस्थान ने सराहनीय कार्य किया है। संस्थान ने तीनों राज्यों में कार्य करने का प्रयास किया है तथा AICRP में किए गये कार्य भी सराहनीय रहा है।

माननीय महानिदेशक महोदय ने बताया कि अमूनन तीनों राज्यों की संस्कृति काफी मिलती-जुलती है इसलिए आपसी सम्पर्क से कार्य को गति दी जा सकती है। अनुसंधान कार्यों को आम जनता अथवा हितधारकों तक पहुचानें के लिए विभिन्न विभागों की सहायता की आवश्यकता हो सकती है तथा सभी अनुसंधान सभी हितधारकों को ध्यान में रख कर ही किये जाने चाहिए । परिषद के हित में आय वर्धित अथवा राजस्व उत्पन्न करने वाले परियोजनाओं पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। बाहर की Funding Agency से संपर्क किया जाना चाहिए जिसके लिए संस्थान सक्षम है। 3-4 वर्षों से यह संस्थान नया आयाम गढ़ रहा है, उन्होंने कहा कि संस्थान प्रगति की सही दिशा में अग्रसर है विशेषकर परामर्शी कार्य के लिए सराहना के पात्र है।

यहा के जलवायु को अच्छा बताते हुए माननीय निदेशक महोदय ने बताया कि यहा प्रचूर हितधारक भी हैं जहा से परियोजनाए ली जा सकती है। श्रमशक्ति सांस्थानिक सहयोग से प्राप्त किया जा सकता है।उड़ीसा में तीन राज्यों के साथ संपन्न SOP बैठक की सराहना करते हुए महानिदेशक महोदय ने कहा कि इसी तरह आपसी सामंजस्य से परियोजना लेने तथा उन्हें सम्पूर्ण करने का प्रयास करें। भूमि की ह्रास की चर्चा करते हुए माननीय ने बताया कि झारखंड में 60% degraded land हैं जिन्हे ध्यान में रखकर परियोजना तथा DPR बनाया जाना चाहिये। इन कार्यों के लिए नए वैज्ञानिकों की जिम्मेवारी बढ़ जाती है।

महानिदेशक महोदय का मांडर भ्रमण

इसी क्रम में संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान) डा. योगेश्वर मिश्रा द्वारा लिखित “क्लोनल तकनीक एवं क्लोनल नर्सरी”, डा.अनिमेष सिन्हा, वैज्ञानिक-एफ द्वारा लिखित “Seed stands in forests of West Bengal”, श्री संजीव कुमार, वैज्ञानिक –ई द्वारा लिखित “Plus Trees and Candidate Plus Trees in Forests of West Bengal – Present Status” तथा डा. आदित्य कुमार, वैज्ञानिक – डी द्वारा लिखित “Butterfly richness of Institute of Forest Productivity, Ranchi” एवं “Avian diversity of Institute of Forest Productivity, Ranchi” आदि पुस्तकों का माननीय महानिदेशक महोदय एवं संस्थान के निदेशक तथा समूह समन्वयक (अनुसंधान) के द्वारा लोकार्पण किया गया।

धन्यवाद ज्ञापन के क्रम में संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान) डा. योगेश्वर मिश्रा ने संस्थान की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए बताया कि संस्थान माननीय की भावनाओं के अनुकूल झारखंड, बिहार तथा पश्चिम बंगाल से परियोजनाए ले रही है जो कि अंतिम चरण में है। स्वर्णरेखा एवं दामोदर का DPR तैयार किए जाने हेतु प्रेषित परियोजनाओं प्रस्ताव भी मंत्रालय से अनुमोदन की अंतिम अवस्था में है | हितधारकों, खनिज क्षेत्रों, राज्य सरकारों से परियोजनाएं मिल रही है। महानिदेशक महोदय को बहुमूल्य समय देनें तथा उर्जावान निदेशक महोदय के तत्पर निर्देशन के लिए धन्यवाद किया साथ ही साथ संपदा के शम्भुनाथ मिश्रा, सूचना तकनीकी के बसंत कुमार, निसार आलम, विस्तार प्रभाग के श्री एस.एन.वैद्य, श्री बी.डी.पंडित, श्री सूरज कुमार एवं बैठक में भाग लेने के लिए संस्थान के सभी कर्मचारियों, अधिकारियों को धन्यवाद ज्ञापन किया।

महानिदेशक महोदय का मांडर भ्रमण

औपचारिक बैठक के बाद श्रीमान माननीय महानिदेशक महोदय ने संस्थान के निदेशक एवं वैज्ञानिकों के साथ अलग से बैठक ली। बैठक में श्रीमान ने शोध कार्यक्रमों की अद्यतन जानकारी प्राप्त की एवं AICRP की प्रगति तथा आगामी परियोजनाओं की जानकारी प्राप्त की। आवश्यक सुझाव देते हुए रोजगारोन्मुख एवं राजस्व उन्मूखी परियोजनाओं पर जोर दिया।

अपराह्न महानिदेशक महोदय ने निदेशक, समूह समन्वयक (अनुसंधान) एवं अन्य वैज्ञानिकों के साथ वन अनुसंधान संस्थान, मांडर का निरीक्षण किया एवं बताया कि यहा काफी सुधार की संभावना है एवं इसे वरीयता के आधार पर किया जाना चाहिए। उन्होंने बाँस रोपण, पौधशाला एवं मृदा परिक्षण केंद्र का भी अवलोकन किया। उन्होने संस्थान द्वारा स्थापित बांस के Demo-plantation की भूरी-भूरी प्रशंसा की

दिनांक 02.06.2022 को दौरे के अंतिम दिन दिनांक 02.06.2022 को माननीय महानिदेशक महोदय श्री अरुण सिंह रावत के अलावा निदेशक वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, डा. सी.कुन्नीकानन एवं संस्थान के निदेशक, डा. नितिन कुलकर्णी ने भी संस्थान परिसर में पौधरोपण किया।

महानिदेशक महोदय की अध्यक्षता में हिंडाल्को (HINDALCO) के अधिकारियों के साथ एक प्रारंभिक बैठक आयोजित की गई जिसमे महानिदेशक महोदय ने किये जा रहे कार्य की जानकारी प्राप्त की एवं अपने सुझाव प्रस्तुत किये। इस बैठक में परिषद के महानिदेशक, उप-महानिदेशक (विस्तार) के अलावा निदेशक, वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर, निदेशक वन उत्पादकता संस्थान, रांची, सहायक महानिदेशक तथा वैज्ञानिक, पर्यावरण प्रबंधन प्रभाग, भा.वा.अनु.शि.प., देहरादून, वैज्ञानिक एवं उप-वन संरक्षक, वन संरक्षण प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून, मुख्य तकनीकी अधिकारी, वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर एवं वन उत्पादकता संस्थान, रांची के अलावा हिंडालको के वरिष्ठ अधिकारी एवं प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे।